कक्षा –एम.ए. **सेमेस्टर – III** **परीक्षा – 2022**

विषय – संस्कृत **प्रश्न-पत्र – MSA-C317**

विवरण – नाटकं नाट्यशास्त्रञ्च

Natakam Natyashastrancha

समय 03 घण्टे **पूर्णाङ्क – 70**

खण्ड- अ (Section-A)

(लघूत्तरीय प्रश्न)

नोट- किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिये- **5X 6= 30**

प्रश्न-1 निम्नांकित श्लोकों का संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए-

(क) गुणवत्युपायनिलये स्थतिहेतोः साधिके त्रिवर्गस्य।
मद्भवननीतिविद्ये कार्य्याचार्य्ये द्रुतमेहि।।

(ख) पीत्वा निरवशेषं कुसुमरसात्मानः कुशलतया।
यद् उद्गिरति भ्रमर अन्येषां करोति तत्कार्यम्।।

प्रश्न-2 निम्नांकित गद्यखण्ड की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

श्रूयतामवधार्यतां च। इह खलु विरक्तानां प्रकृतीनां द्विविधं प्रतिविधानम्- अनुग्रहो निग्रहश्च। अनुग्रहस्तावदाक्षिप्ताधिकारयोः भद्रभटपुरुषदत्तयोः पुनरधिकारारोपणमेव। अधिकारश्च तादृशेषु व्यसनयोगादनभियुक्तेषु पुनरारोप्यमाणःसकलमेव राजस्य मूलं हस्त्यश्वमवसादयोत्। डिङ्गरातबलगुप्तयोरतिलुब्धयोः सकलराज्यप्रदानेनाप्यपरितुष्यतोरनुग्रहः कथं शक्यः। राजसेनभागुरायणयोस्तु धनप्राणशभीतयोः कुतोऽनुग्रहःस्यावकाशः।

प्रश्न-3 मुद्राराक्षसम् नाटक के आधार पर आचार्य चाणक्य की कूटनीति को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न-4 मुद्राराक्षसम् नाटक के तृतीय अंक की कथावस्तु की नाटकीय दृष्टि से क्या उपयोगिता है ? सिद्ध कीजिए।

प्रश्न-5 विशाखदत्त की नाटकीय-शैली को सोदाहरण समझाइये।

प्रश्न-6 मुद्राराक्षसम् नाटक में विशाखदत्त की मौलिकता को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न-7 अधोलिखित कारिकाओं का सप्रसंग अनुवाद कीजिए-

(क) धर्मो धर्मप्रवृत्तानां कामः कोमोपसेविनाम्।
निग्रहो दुर्वितीनां विनीतानां दमक्रिया।।

(ख) देवानां मानसी सृष्टिर्गृहेषूपवनेषु च।
यत्नभावाभिनिष्पन्नाः सर्वे भावा हि मानुषा।।

प्रश्न-8 निम्नांकित विषयों पर टिप्पणी लिखिए-

(क) नान्दी **(ख)** मत्तवारणी

प्रश्न-9 आचार्य भरत के अनुसार भारती-वृत्ति पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न-10 आचार्य भरत के अनुसार नाट्यगृह के लक्षणों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड-ब (Section-B)
दीर्घोत्तरीय प्रश्न)

नोट- किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विस्तृत रूप में दीजिये। प्रत्येक प्रश्न दस अंक का है- 4X 10 = 40

प्रश्न-1अधोलिखित श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये-

(क) शोचन्तोऽवनतैर्नराधिपभयात् धिक्शब्दगर्भैर्मुखै-
मर्मग्रासनतोऽवकृष्टमवशं ये दृष्टवन्तः पुरा।
ते पश्यन्ति तथैव सम्प्रति जना नन्दं मया सान्वय,
सिंहनेव गजेन्द्रमद्रिशिखरात सिंहासनात्पातितम्।।

(ख) सुविश्रमब्धैरङ्गैः पथिषु विषमेष्वप्यचलता,
चिरं धुर्येणोढा गुरुरपि भुयो यास्य गुरुणा।
धुरं तामेवोज्चैर्नववयसि वोढुं व्यवसितो,
मनस्वी दम्यत्वात्स्खलति च न दुःखं वहति।।

प्रश्न-2 आचार्य चाणक्य के चरित्र-चित्रण पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

प्रश्न-3 नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों के आधार मुद्राराक्षसम् नाटक की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न-4 निम्नांकित गद्यखण्डों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) तन्मयाप्यस्मिन्वन्तुनि न शयानेन स्थीयते । यथाशक्ति क्रियते तत्संग्रहणं प्रति यत्नः । अत्र तावद् वृषलपर्वतकयोरन्यतर विनाशेनापि चाणक्यस्यापकृतं भवतीति विषकन्यया राक्षसेनास्माकमत्यन्तोपकारि मित्रं घातितस्तपस्वी पर्वतक इति संचारितो जगति जनापवाद। लोकप्रत्ययार्थमस्यैवार्थस्याभिव्यक्तये पिता ते चाणक्येन घातित इति रहसि त्रासयित्वा भागुरायणेनापवाहितः पर्वतकपुत्रो मलयकेतुः।

(ख) मा मैवम् । ताः खलु द्विप्रकाराः प्रकतयश्चन्द्रगुप्तसहोत्थायिन्यो नन्दानुरक्ताश्च । तत्र चन्द्रगुप्तसहोत्थायिनीनां चाणक्यदोषा एव विरागहेतवो न नन्दकुलानुगतानाम् । तास्तु खलु नन्दकुलमनेन पितृभूतं घातितमित्यपरागामर्षाभ्यां विप्रकृताः सत्यः स्वाश्रयमलभमानाश्चन्द्रगुप्तमेवानुवर्तन्ते । त्वादृशं पुनः प्रतिज्ञोद्धरणे संभाव्यशक्तिमभियोक्तारमासाद्य क्षिप्रमेनं परित्यज्य त्वामेवाश्रयिष्यन्ति इत्यत्र निदर्शनं वयमेव।

प्रश्न-5 आचार्य भरत के अनुसार नाटक में नाट्यवृत्तियों के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न-6 आचार्य भरत के अनुसार नाट्य-प्रयोजनों को सविस्तार लिखिए।

प्रश्न-7 अधोलिखित सन्दर्भों पर प्रकाश डालिए-

(क) कैशिकी वृत्ति **(ख)** रंगशीर्ष

प्रश्न-8 आचार्य भरत के अनुसार प्रेक्षागृहों के प्रकारों का वर्णन कीजिए।